Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

ग्वालियर में सिंधिया कालीन भित्ति चित्रों में नारी चित्रण

रेनू पवैया
सहायक प्राध्यापक
बी,व्ही,एम, कॉलेज ग्वालियर

भारतीय चित्रकला के श्रृंगार परक विश्लेषण में नारी को विशेष रूप से चित्रित किया गया है। आदिकाल से ही नारी चित्रण की विशेष विषयवस्तु मानी जाती रही है। क्योंकि नारी आरम्भ से ही सौंदर्य और श्रृंगार की प्रतीक रही है। जिसके कारण नारी के विविध रूपों ने भारतीय चित्रकला को विभिन्न विषयात्मक उपलब्धियों से अभिभूत किया है।[1]

भारतीय चित्रकला अंलकारिता एक विशेषता के रूप में विद्यमान रही है। भारतीय कलाकारों ने शिव के साथ सुन्दर का भी विचार चित्रों में प्रकट किया है। नारी प्राकृति के सौन्दर्य वर्धन के लिए भी उन समस्त अलंकारिक तत्वों को हम भारतीय चित्रकला में देख सकते हैं।[2] भारत में अनेक राजा महाराजाओं ने नारी को केन्द्रित कर अनेक चित्र व मूर्तियों का निर्माण कराया। जिन्हें हम मंदिर, महल एवं बहुत से दार्शनिक स्थलों पर देख सकते हैं। इनके अतिरिक्त भारत के महान चित्रकारों जैसे राजा रवि वर्मा, रविन्द्र नाथ टैगोर, अवनीन्द्र नाथ ठाकुर, यामिनी राय आदि ने नारी को केन्द्रीत कर अपनी कृतियों को महानता प्रदान की है।[3]

ग्वालियर में भी सिंधिया कालीन संस्कृति के विभिन्न आयामों के प्रतीकों के रूप में कई ऐसे स्मारक स्थल स्थित हैं, जिसमें सिंधिया शासकों के स्थापत्य, संगीत, साहित्य अन्य ललित कला के क्षेत्र में दिये गये योगदान के प्रमाण प्राप्त होते हैं।[4] सिंधिया राजाओं ने अनेकों विषयों पर चित्र बनवाये। जिसमें नारी को विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया है। इनकी मराठी वेशभूषा तथा विभिन्न क्रिया कलापों में मग्न नारी आकृतियों को चित्रांकित किया गया है। जैसे धार्मिक चित्र, राग – रागनियां, जन सामाजिक तथा लोक चित्रण आदि सभी चित्रों में नारी का चित्रण विशेष रूप में दृष्टव्य है।

सिंधिया महाराजाओं ने मोतीमहल, कमलराजा महाविद्यालय, कोटेश्वर मंदिर, राम–जानकी, गोस्वामी मंदिर, छत्रियां आदि ऐतिहासिक धरोहरों का निर्माण कराया, जिसमें चित्रकारी द्वारा अनेक विषयों को लेकर नारी आकृतियों में सामान्य कद का चित्रण किया, जो खड़ी व बैठी सभी रूपों में बनाई गई है। आकृतियों के चेहरे गोल अण्डाकार बनाये गये हैं। चेहरे पर नेत्रों के निचले भाग में कोमल छाया देकर गहराई दिखाई गई है। चिबुक दोहरी बनायी गई है। कुछ स्त्री आकृतियां कोमलांगी, यौवन तथा लज्जा से पूण्र प्रतीक होती है। जिसमें नारी का गुलाबी चेहरा कलाकार ने यथार्थ रूप से चित्रित किया है।[5]

सिंधिया कालीन मोतीमहल में चित्रित राग माला में सभी नारियों (नायिका) को मराठा परिधानों (आठ गजी साड़ी) पहने हुए है। आभूषणों में लम्बी माला, कर्णकुण्डल, नाक में नथ, अनेक हार, चंद्रहार, स्वर्ण मालाएं, श्वेत युक्तमाल, स्वर्ण चूड़ियां आदि से शोभायमान अंकित की गई है। स्त्रियों के केश जूड़े के रूप में व गुंथे हुए चित्रित किया है।

सिंधिया कालीन इमारत मोतीमहल में अंकित चित्रों में मराठा शैली की मकरवाहिनी गंगा, तुरही बजाते कृष्ण, राग मालकोस, रागिनी रामकली, रागिनी सोपाटिका, रागिनी, मातश्री , राग मेघ आदि में चित्रों में नारी

का अंकन है। कमलाराजा कन्या महाविद्यालय में चित्रकला विभाग की सीढ़ियों के ऊपर द्वार पर बना गणेश चित्र, आलेखित है। इस आलेख में नारी का चित्र मराठा रानियों का चित्रण देखने को मिलता हे। जिसमें वे पूर्णरूप से मराठा वैभव का दर्शन होता है।

छत्रियों में चित्रांकित चित्र नरसिंहावतार, वीणावादन करती नायिका, पतंग उड़ातें हुए श्रीकृष्ण, बैठी हुई स्त्री केश सज्जा करती नायिका तथा राधाकृष्ण आदि चित्र बने हुए है। जिसमें नारी आकृति को प्रमुख रूप से चित्रित किया गया है।

मंदिरों में भी सिंधिया शासकों ने जिन चित्रों का निर्माण कराया है। उन चित्रों में देवी देवताओं को मराठा वेश–भूषा में तथा मराठा प्रभावयुक्त बनाया है। जैसे– कोटेश्वर मंदिर में राधा कृष्ण, कृष्ण गोपियां, गणेश तथा रिद्धी–सिद्धी, राम का राज्याभिषेक तथा राम जानकी मंदिर में बांसुरी बजाते हकृष्ण, अघोरी एवं स्त्रियां, पूतना वद्य, गोवर्धन पर्वत, दूध निकालते श्रीकृष्ण, रासलीला, कृष्ण को फल खिलाती माता यशोदा आदि चित्र चित्रित है।

ग्वालियर के विभिन्न स्मारकों में नारी चित्रण के विशेष चित्रों का वर्णन इस प्रकार है–

1–गणेश तथा रिद्धी–सिद्धी –

इस चित्र में कमलरूपी स्वर्ण सिंहासन पर गहरी नीली चादर पर चर्तुभुजी गणेश चित्रांकित है। समीप ही रिद्धी–सिद्धी का भी अंकन हैं। गणेश आराम मुद्रा में दाहिना पैर सीधा व बांये पैर मोड़े हुये बैठे हैं। गणेश का एक हस्त समीप बैठी रिद्धी के कन्धे पर व एक हस्त से उनका हस्त अपने हाथ में लिये हुए है। रिद्धी स्वर्णिम किनारीयुक्त गहरी कत्थई साड़ी व हरित चोली पहने हैं। नीचे पैरों को दबाती हुई सिद्धी का अंकन है, जो दोनों हाथों से गणेश जी के पैरों को दबा रही हैं। सिद्धी स्वर्णिम किनारीयुक्त हरित परिधान व गुलाबी चोली पहने है। रिद्धी–सिद्धी के केश दाहिनी ओर श्वेत फूलों के गजरों द्वारा जूड़े के रूप में बंधे हैं। दोनों आकृतियां समस्त आभूषण माथे पर बेंदा नथ, स्वर्णहार, मोतीयों की माला, कंगन, चूड़ियां, कुण्डल आदि से शोभायमान है।

स्वर्ण सिंहासन के आस–पास दो परिचारिका चांवर हिलाती हुई चित्रित है। दाहिनी ओर अंकित परिचारिका गुलाबी साडी व हरित चोली धारण किये है। केश दाहिनी ओर गजरा लगा हुआ जूडे के रूप में बंधे हुए है। यह मोर पंखो का चामर हिला रही है। बांये ओर चित्रित परिचारिका गहरी हरित साड़ी, गुलाबी, चोली धारण किये हुये हैं तथा बांये कन्धे पर स्वर्णिम किनारीयुक्त श्वेत ओढ़नी पकड़े हुए चित्रांकित हैं। यह श्वेत चांवर हिलाती हुई चित्रित है। यह बांये ओर गजरा लगाए हुए जूड़ा बांधे है। दोनों परिचारिका समस्त आभूषणों से सुसज्जित हैं, जैसे– बेंदा, नथ, स्वर्णहार, मालाएं, कुण्डल, कंगन, आदि।

2–रासलीला –

इस चित्र में श्रीकृष्ण गोपियों सहित हाथ में हाथ पकड़े, एक जैसी पोशाक धारण किए हुए नृत्य कर रहे हैं। इसमें दोनों ओर दो गोपियां वाद्ययंत्र बजा रही हैं। साथ में नृत्य कर रही गोपियां पीली किनारीयुक्त लाल साड़ी, सफेद किनारीयुक्त गहरी हरी चोली गले में सफेद हार, कान में सफेद कुण्डल एवं हाथों में सफेद कंगन धारण किए हुए है। साथ में खड़ी दोनों गोपियां पीली किनारीयुक्त गहरी हरी साड़ी, पीली किनारी युक्त लाल चोली, गले में तीन सफेद हार एवं कान में कुण्डल धारण किए हुए हैं। चित्र में दाहिनी ओर खड़ी गोपी ढोलक का वादन कर रही है तथा बांयी ओर खड़ी गोपी करतल ध्वनि से संगीत दे रही है।

3–रागिनी रामकली –

रागिनी रामकली, हिण्डोल राग की द्वितीय भार्या के रूप में चित्रित की गई हैं। इस चित्र में नायिका गुलाबी रंग के पीठिका (तिपाई) पर आसीन है। सुनहरी कामदार हरितवर्णीय परिधान व लाल रंग की चोलीधारण किये नायिका अत्यधिक आकर्षक दृष्टव्य हो रही हैं। केशों को जूड़े के रूप में ऊंचा बांधे हुए चित्रित किया गया हैं, नीचे भूमि पर पुरूषाकृति को नायिका के पैरों को दोनों हाथों से आभूषण धारण करवाते हुए व घुटने मोडे बैठक मुद्रा में दृष्टव्य हैं। यह विनम्र तथा शालीन नायक अत्यन्त भोलेमुख का दर्शित हैं व सिर पर लाल पगड़ी तथा श्वेत परिधान धारण किये हुए हैं, नायिका दाहिने हाथ से अपना अंचल पकड़े व बायां हाथ नायक के सिर की ओर किये हुए हैं। नायिका श्रृंगार करते हुए दृष्टव्य हैं। समीप पात्र में आभूषण अंकित हैं, नायिका के समीप बायीं ओर एक नारी आकृति चित्रित हैं। जो नायक को निर्देश देती हुए चित्रित है। वह आसमानी स्वर्णिम् किनारीयुक्त लांछदार पारदर्शी परिधान धारण किये हुए हैं। चोली हल्के बैगनी रंग की हैं, व केश सज्जा नायिका के समान हैं। दोनो नारी आकृति समान आभूषणों से सुसज्जित हैं। गहरे लाल व काले रंग के धरातल में चित्रित संयोजन अत्याधिक उभरा हैं, हल्के रंग के वस्त्र धारण किये आकृतियां मनोहारी प्रतीत होती हैं।

4–मराठा रानी –

कमलाराजा कन्या महाविद्यालय में चित्रकला विभाग की भित्ति पर अण्डाकार फ्रेम में चार मराठा राजसी नारी आकृतियों का चित्रण किया गया है। ये स्त्री संभवतः तात्कालीन राजा की पत्नी हो, जिसका चित्रण चितेरो द्वारा करवाया गया। ये स्त्री आकृतियां एक ही स्त्री की हैं। संभवतः ये स्त्री सरस्वती शिशु मंदिर की मूर्ति के सदृश्य प्रतीत होती है। इन रानियों के चित्रों में वस्त्रों के रंगाकंन के अलावा आभूषणों चेहरों में समानता दृष्टिगत होती है।

सिंधियाकालीन भित्तिचित्रों में कलाकारों ने अपनी अभिव्यक्ति को विभिन्न माध्यमों के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस प्रस्तुतीकरण में सिंधियाकालीन सांस्कृतिक परिस्थितियों को विभिन्न विषय वस्तुओं के माध्यम से प्रकट किया गया हैं । मानव चित्रण में सिंधिया राजपरिवार के सदस्य, सिंधिया कालीन समाज एवं सैनिको को प्रमुख भूमिका के रुप में उपयोग किया गया है। ग्वालियर में प्राप्त भित्तिचित्रण तात्कालीन मराठा संस्कृति से प्रेरित है। समस्त भित्तिचित्रण की विषय वस्तु से सिंधियाकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का ज्ञान प्राप्त होता है। भित्तिचित्रों में अंकित नायक–नायिका प्रायः राजसी परिवार से ही संबंधित प्रतीत होते हैं प्रायः स्त्री आकृति को कोमलांगी,यौवन एवं लज्जा से पूर्ण बनाई गई हैं । परंतु विषयानुसार प्रौढ़ एवं स्थूल नारियों का भी अंकन है, जैसे मोतीमहल में रागिनी गुजरी प्रौढ़ नारी प्रतीत होती है।

संदर्भ ग्रंथ–

1, वर्मा,अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास
2, अग्रवाल,डॉ,गिर्राज किशोर, कला और कलम
3, सॉखलकर, र,वि, आधुनिक चित्रकला का इतिहास
4, माहेश्वरी, हरिबल्लभ, ग्वालियर के आसपास
5, ोधार्थी को सर्वे के द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार